CLASSMATE
Date ______
Page ______

ब्राह्मण साहित्यों, महाकाव्य, लौकिक (धर्मेतर) साहित्यों (Secular Literature), ऐतिहासिक रचनाओं एवं अर्द्ध-ऐतिहासिक रचनाओं के बारे में लिखें।

ब्राह्मण साहित्य के अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद, वेदांग, महाकाव्य, पुराण, स्मृति ग्रंथ आते हैं।

वेद :- वेद भारत के प्राचीनतम धर्म ग्रंथ हैं। वैदिककालीन संस्कृति के ज्ञान का एकमात्र स्रोत होने के कारण वेदों का ऐतिहासिक महत्व काफी है। वेदों की संख्या चार है - (1) ऋग्वेद, (2) सामवेद, (3) यजुर्वेद और (4) अथर्ववेद।

पूर्ववैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई॰पू॰) की जानकारी का एकमात्र स्रोत ऋग्वेद है। उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई॰ पू॰) के इतिहास के अध्ययन के प्रमुख स्रोत यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रंथ एवं उपनिषद हैं।

ऋग्वेद - ऋग्वेद का अधिकांश भाग देव स्तुतियों से भरा हुआ है। परन्तु इसके कुछ मंत्र ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख करते हैं। ऋग्वेद काल की एक प्रमुख घटना (ऐतिहासिक) दस राजाओं का युद्ध (Battle of Ten Kings) या दशराज्ञ युद्ध का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। इस युद्ध में भरतों (जनजाति) के राजा सुदास ने दस राजाओं के एक संघ को हराया था। इस संघ में आर्यों के प्रमुख जन (अनु, यदु, पुरु, द्रुह, तुर्वसु) तथा 5 लघु जनजातियों का समूह सम्मिलित था, जिनके पुरोहित विश्वामित्र थे। यह युद्ध परुष्णी नदी (वर्तमान में रावी नदी) के तट पर लड़ा गया।

ऋग्वेद की पाँच शाखायें - शाकल, वास्कल, आश्वलायन, शांखायन एवं मांडुक्य हैं। ऋग्वेद में 10 मंडल एवं 1028 सूक्त एवं विभिन्न ऋषियों द्वारा रचित कुल 10,580 ऋचायें हैं। ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में पहली बार शूद्रों का उल्लेख किया गया है।

2.

सामवेद - साम का शाब्दिक अर्थ गान होता है। इसमें मुख्यत: यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। इसे भारतीय ~~संस्कृति~~ संगीत का मूल कहा जाता है।

यजुर्वेद - यजुर्वेद में यज्ञों के नियमों एवं विधि-विधानों का संकलन मिलता है। यजुर्वेद के दो भेद हैं - कृष्ण यजुष, और शुक्ल यजुष।

अथर्ववेद - इस वेद में सामान्य मनुष्यों के विचारों तथा अंध-विश्वासों का वर्णन मिलता है। इनमें विविध विषयों, जैसे - आयुर्वेद, चिकित्सा, भूत-प्रेत, जादू-टोना, राजभक्ति, विवाह तथा प्रणय गीतों आदि का वर्णन मिलता है।

वेदों की शाखायें - ऋग्वेद की पाँच शाखायें हैं थी - शैशिरीयशाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन और मांडूकेय। शुक्ल यजुष (यजुर्वेद) की दो प्रधान शाखायें हैं - माध्यंदिन और काण्व। कृष्ण यजुष (यजुर्वेद) की चार शाखायें मिलती हैं - तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक (या कठ) तथा कापिष्ठल। सामवेद संहिता के दो भाग हैं - आर्चिक और गान। सामवेद की दो शाखायें थी - कौथुम और राणायनीय। अथर्ववेद की दो शाखायें उपलब्ध हैं - पैप्पलाद और शौनक।

ब्राह्मण ग्रंथ - प्राचीन काल में संस्कृत भाषा में चारों वेदों का अनुवाद हुआ, वे ही ब्राह्मण ग्रंथ कहलाये। सभी वेदों के अलग-अलग ब्राह्मण ग्रंथ हैं। प्रत्येक वेद के ब्राह्मण ग्रंथ निम्नवत् हैं -
ऋग्वेद - ऐतरेय और कौषीतकी ब्राह्मण
सामवेद - पंचविंश और ताण्ड्य ब्राह्मण
यजुर्वेद - शतपथ, वाजसनेय और तैतरीय ब्राह्मण
अथर्ववेद - गोपथ ब्राह्मण।

इन ब्राह्मण ग्रंथों में हर्यक वंश के बिम्बिसार के पूर्व की घटनाओं की ऐतिहासिक

जानकारी मिलती है। ऐतिहासिक दृष्टि से शतपथ ब्राह्मण का महत्व अत्यधिक है क्योंकि इसमें गांधार, कुरु, पांचाल कौशल, ~~विदेह~~ विदेह आदि राजाओं का उल्लेख है।

आरण्यक - ब्राह्मण ग्रंथों के अन्त में आरण्यक ग्रंथों की रचना हुई। इनका अध्ययन - अध्यापन वनों या अरण्यों हुई, इसीलिए इन ग्रंथों को आरण्यक कहा गया। इनमें ज्ञान एवं चिंतन की प्रधानता दी गई है। इन दार्शनिक रचनाओं से कालान्तर में उपनिषदों का विकास हुआ। शांखायन, तैतरीय, वृहदारण्यक, जैमिनी, मैत्रायणी तथा तल्वकार आदि प्रमुख आरण्यक ग्रंथ हैं।

उपनिषद् - उपनिषद् शब्द का साधारण अर्थ है - समीप बैठना। (ब्रह्म विद्या की प्राप्ति के लिए शिष्य का गुरु के पास बैठना) ये भारतीय दर्शन के मुख्य स्त्रोत माने जाते हैं। उपनिषदों का विकास आरण्यकों से ही हुआ। इन्हें आरण्यकों के पूरक के रूप में भी माना जाता है। इनमें मुख्यतः आत्मा, परमात्मा, सृष्टि की रचना तथा प्राकृतिक चमत्कारों का वर्णन मिलता है। इनकी संख्या 108 है, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्न हैं - ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छांदोग्य, ~~बृहदारण्यक~~ वृहदारण्य, श्वेताश्वतर, कौशीतकी उपनिषद आदि।

कठोपनिषद् बुद्ध से भी प्राचीन माना जाता है। छान्दोग्य उपनिषद में सर्वप्रथम कृष्ण एवं प्रथम तीन आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ) का उल्लेख मिलता है। इन तीनों आश्रम सहित चौथे आश्रम संन्यास का उल्लेख जाबालिउपनिषद में मिलता है। सत्यमेव जयते वाक्य ~~मुण्डक~~ मुण्डकोपनिषद में मिलता है। वास्तव में उपनिषद प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने के प्रमुख स्त्रोत हैं। वैदिक साहित्य में इनका स्थान सबसे अन्त में है, इसीलिए इन्हें वेदान्त भी कहा जाता है।

[सूत्र - वैदिक साहित्य के जटिल होने

के कारण कर्मकाण्डों से सम्बन्धित सिद्धान्तों को एक नवीन रूप दिया गया। इन्हें ही सूत्र-साहित्य कहा गया। सूत्र-साहित्यों को चार भागों में बाँटा गया - श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र, धर्म सूत्र, और शुल्ब सूत्र।]

वेदांग- वेदों का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त करने के लिए वैदिक काल के अन्त में वेदांगों की रचना हुई। इनकी संख्या छः है. शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त (भाषा विज्ञान) छन्द, और ज्योतिष। शिक्षा में वैदिक स्वरों की शुद्ध उच्चारण की विधि का वर्णन है। कल्प सूत्र में कर्मकाण्ड, धर्म व्यवस्था, यज्ञ-संस्कार विधि आदि का वर्णन होता है। ~~व्याकरण~~ शब्दों की मीमांसा (गहराई से विचार-विमर्श) करने वाले शास्त्र को व्याकरण कहा गया। व्याकरण की सर्वप्रमुख रचना पाणिनी कृत 'अष्टाध्यायी' (पाँचवी सदी ई० पू०) है। यास्क ने 'निरुक्त' की रचना की जो भाषा शास्त्र का प्रथम ग्रंथ माना जाता है। वैदिक मंत्र प्रायः छन्दबद्ध हैं। छन्दशास्त्र में पिंगल मुनि का ग्रंथ छन्दशास्त्र काफी महत्वपूर्ण है।

शुभ मुहूर्त में याज्ञिक अनुष्ठान करने, ग्रहों और नक्षत्रों का अध्ययन कर सही समय ज्ञात करने की विधि से वेदांग ज्योतिष की उत्पत्ति हुई। ज्योतिष संबंधी सर्वप्राचीन और सर्वप्रमुख कृति लगध मुनि कृत वेदांग ज्योतिष है।

स्मृति साहित्य- ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी से लेकर पूर्व मध्यकाल तक विभिन्न स्मृति ग्रंथों की रचना हुई जो तात्कालिक इतिहास जानने के प्रमुख स्रोत हैं। कुछ प्रमुख स्मृति ग्रंथ निम्नवत् हैं - मनु स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति, पराशर स्मृति, बृहस्पति स्मृति,

कात्यायन स्मृति।

मनुस्मृति (शुंग काल ई० पू० द्वितीय सदी) सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रामाणिक है, शेष गुप्तकालीन है।

पुराण- 'पुराण' का शाब्दिक अर्थ 'प्राचीन' या 'पुराना' होता है। पुराणों की रचना मुख्यत: संस्कृत में हुई है। पुराणों से प्राचीन वंशों की वंशावली की जानकारी मिलती है। इनके संकलनकर्ता महर्षि लोमहर्ष तथा उनके पुत्र उग्रश्रवा माने जाते हैं। पुराणों की संख्या 18 है, जैसे- मत्स्य पुराण, मार्कण्डेय पुराण, भागवत पुराण, ब्रह्म पुराण, ~~पद्म~~ पद्म पुराण, विष्णु पुराण, वायु पुराण, नारद पुराण, अग्नि पुराण, वाराह पुराण, गरुड़ पुराण, स्कन्दपुराण, लिंग पुराण, स्कन्द पुराण, कूर्म पुराण, ~~भाग~~ भागवत पुराण, वैवर्त पुराण और ब्रह्माण्ड पुराण।

स्कन्द पुराण भगवान शिव के पुत्र स्कन्द (कार्तिकेय, सुब्रमण्य) के नाम पर है। यह सबसे पुराना पुराण है। विष्णु पुराण में मौर्य वंश का उल्लेख मिलता है। आंध्र वंश के इतिहास पर मत्स्य पुराण से प्रकाश पड़ता है। वायु पुराण में गुप्त साम्राज्य एवं चन्द्रगुप्त प्रथम का उल्लेख मिलता है।

महाकाव्य- वैदिक साहित्य के पश्चात भारतीय इतिहास जानने के धार्मिक स्रोतों में महाकाव्यों का स्थान आता है। महाकाव्य दो हैं- रामायण, और महाभारत।

भारत के सम्पूर्ण धार्मिक साहित्यों में इन दोनों ही महाकाव्यों का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आदरणीय स्थान है। इन महाकाव्यों में वर्णित नैतिक मूल्य एवं आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं। मूलत: इन ग्रंथों की रचना ई० पू० चौथी शताब्दी में मानी जाती है।

<u>रामायण</u>- रामायण भारतीयों का सर्वप्राचीन महाकाव्य है। इसकी रचना महर्षि वाल्मीकि द्वारा की

गई थी। महाभारत में वाल्मीकि के साथ-साथ रामायण की संक्षिप्त कथा भी मिलती है। इससे पता चलता है कि रामायण, महाभारत से प्राचीन है। रामायण के रचना काल में विद्वानों में मतभेद है। विन्टरनित्ज (Winternitz) ने अपनी पुस्तक 'History of Indian Literature' में रामायण का रचना काल ई० पू० चौथी शताब्दी माना है। इसमें 24,000 श्लोक हैं, अतः इसे चतुर्विंशति साहस्री संहिता कहा जाता है। ऋग्वेद की तरह रामायण से भी पता चलता है कि 'विराट पुरुष' के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, उरु भाग से वैश्य तथा पैरों से शूद्र वर्ण की उत्पत्ति हुई थी।

महाभारत - महाभारत की रचना वेदव्यास ने की थी। अधिकांश विद्वानों ने महाभारत को एक ऐतिहासिक घटना माना है। महाभारत में एक लाख श्लोकों का संग्रह है। अतः इसे शत साहस्त्र संहिता कहा जाता है। महाभारत में शक, यवन, पारसीक, हूण आदि जातियों का उल्लेख है।

लौकिक (धर्मेतर) या धर्म निरपेक्ष साहित्य (Secular Literature) - धार्मिक साहित्यों के अतिरिक्त प्राचीन भारत में अनेक धर्मनिरपेक्ष, लौकिक या धर्मनिरपेक्ष साहित्यों की रचना की गई, जिसके अन्तर्गत ऐतिहासिक और अर्द्ध-ऐतिहासिक ग्रंथ आते हैं। इनका इतिहास के पुनर्निर्माण में महत्व है।

ऐतिहासिक ग्रंथ - ऐसे ग्रंथों में अर्थशास्त्र, नीतिसार एवं राजतरंगिणी महत्वपूर्ण हैं। अर्थशास्त्र की रचना 'कौटिल्य' ने की थी। अर्थशास्त्र से मौर्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था की, विशेषरूप से चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रशासन की, अच्छी जानकारी मिलती है। 'कामन्दक' रचित 'नीतिसार' में दसवीं शताब्दी के राजस्व सिद्धान्त तथा राजा के कर्तव्यों पर प्रकाश डाला गया है। प्राचीन भारतीय इतिहास

में शुद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ केवल कल्हण कृत 'राजतरंगिणी' है। यह संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं के क्रमबद्ध इतिहास लिखने का प्रथम प्रयास है। संस्कृत भाषा लिखित इस ग्रंथ की रचना 1148 ई० से 1150 ई० के बीच हुई। राजतरंगिणी का शाब्दिक अर्थ - राजाओं की नदी होता है। इसका भावार्थ है - राजाओं का इतिहास या समय-प्रवाह। इस ग्रंथ में आदिकाल से लेकर 1151 ई० तक का कश्मीर का इतिहास मिलता है। इस पुस्तक के अनुसार कश्मीर का नाम "कश्यपमेरु" था जो ब्रह्मा के पुत्र ऋषि मरीचि के पुत्र थे।

"This is the only work in ancient Indian literature which may be regarded as historical text in the true sense of the word".

पाणिनी की 'अष्टाध्यायी' तथा कात्यायन के 'वार्तिक' आदि व्याकरण ग्रंथों से मौर्य के पूर्व के इतिहास और मौर्ययुगीन राजनीतिक अवस्था पर प्रकाश पड़ता है। पतंजलि के महाभाष्य, विशाखदत्त के मुद्राराक्षस, कालिदास के अभिज्ञानशाकुंतलम्, मालविकाग्निमित्रम्, रघुवंशम्, मेघदूतम्, शूद्रक की मृच्छकटिकम्, वात्स्यायन के कामसूत्र, दण्डि के दशकुमारचरितम से तात्कालिन इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

वाकपति के गौड़वाहो, बिल्हण के विक्रमांकदेव चरित, संध्याकरनन्दी कृत रामचरित, चन्दबरदायी के पृथ्वीराजरासो, नयनचन्द्र के हम्मीरकाव्य, सोमेश्वरकृत कीर्ति कौमुदी से भी प्राचीन इतिहास के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। हर्षवर्द्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट के हर्षचरित और कादम्बरी से हर्षकालीन भारत की जानकारी मिलती है। हर्षवर्धन ने स्वयं तीन नाटकों की रचना की - नागानन्द, रत्नावली, प्रियदर्शिका।